 ISSN : 2348-0033 (Online) | ISSN : 2249-4944 (Print)

f'k{kk dk vkn'kZ & oSfnd nf"V

Mk0 onuk :gyk
एसो0प्रो0 संस्कृत विभाग, जे0वी0 जैन कालिज, सहारनपुर

ऋृग्वेद विश्व का सर्वप्राचीन ग्रंथ है और वैदिक शिक्षा प्रणाली विश्व की प्राचीन शिक्षण विधि। यह सर्वविदित है कि वेद ज्ञान के आकर हैं "वेदोज्ञानराशि":। ज्ञानार्थक विद् धातु से करण अर्थ में घञ् प्रत्यय करने पर वेद शब्द निष्पन्न होता है 'वेदयतीति वेद': 1 ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिशद्, वेदांग, विज्ञान, संगीत आदि समस्त शास्त्रों का उद्गम वेद हैं। वेदांग के संदर्भ में स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण का विशेष ज्ञान प्रदान करना 'शिक्षा' कहा गया है– 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षेति'2। 'शिक्षा' वैदिक शब्द है, सर्वप्रथम ऋृग्वेद में इसका प्रयोग हुआ है–

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयादिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो ने बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।।3

ऋृग्वेद में शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया है, यथा– हे पुरुहूत इन्द्र! जो तुम्हारा बल है उसे सखा मनुष्यों को प्रदान करो।4 यहाँ शिक्षा किसी भी प्रकार के ज्ञान को उत्तम रीति से प्रदान करने के अर्थ में प्रयुक्त है। शिक्ष् विद्योपादाने धातु से टाप् प्रत्ययपूर्वक 'शिक्षा' शब्द की निष्पत्ति होती है, इसका अर्थ है जिससे विद्या का उपादान किया जाए वह शिक्षा है।5 अतः स्पष्ट है कि 'शिक्षा' विद्या प्राप्ति का साधन है, शिक्षा साधन है और 'विद्या' साध्य। शिक्षा की सार्थकता 'विद्या' अर्थात् ज्ञानप्राप्ति है जिससे अज्ञान का निवारण होता है। 'सा विद्या या विमुक्तये' और 'ऋृते ज्ञानान्न मुक्ति' जैसे उपनिशद् वाक्यों से इसी तथ्य की पुष्टि होती है। जगत् सम्बन्धी ज्ञान को अविद्या और जीवन के चरम सत्य 'चौतन्य' का अवबोध कराने वाले ज्ञान को 'विद्या' कहा गया है। अविद्या अर्थात् सांसारिक ज्ञान से मर्त्यलोक की यात्रा सम्यक् रूप से पूर्ण करके विद्या अर्थात् आत्मज्ञान से अमरत्व को प्राप्त करता है –
'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया+मृतमश्नुते।' जिसे ultimate truth, self - realisation से अभिहित किया जाता है।वैदिक दृष्टि में शिक्षा के आदर्श बहुत उन्नत थे। विद्यार्थी का सर्वांगीण अभ्युदय, चरित्र – निर्माण, सर्वजनकल्याण और विश्वबंधुत्व की भावना का विकास जैसे शिक्षा के आदर्शों की प्राप्ति से मानव जीवन को सार्थक करना शिक्षा का लक्ष्य था।

सर्वांगीण अभ्युदय –वैदिक दृष्टि में मानव का समग्रता में कल्याण ही शिक्षा का उद्देश्य है। जगत् के दो प्रमुख तत्व हैं जड़ और चेतन, जो मानव शरीर में क्रमशः शरीर और आत्मा के रूप में विद्यमान हैं। अतः शरीरसम्बन्धिनी सांसारिक उन्नति और आत्मा से संबंधित ज्ञानस्वरूप निःश्रेयस् की उपलब्धि का मार्ग वैदिक प्रणाली की शिक्षा द्वारा प्रस्तुत किया गया। भौतिक और आध्यात्मिक जीवन के सन्तुलन से ही मानव जीवन का सर्वांगीण अभ्युदय संभव है। सुधीर कुलकर्णी का कथन है - The ancient Indian system of education was... a comprehensive scheme of perfecting the individual personality in all its facets - physical, moral, intellectual, religious and spiritual-7

वैदिक दृष्टि में शिक्षा के दो सोपान हैं; एक भौतिक ज्ञान –जिसमें विज्ञान, मानविकी, ललित कलाएँ और शिल्प, चिकित्सा आदि सम्मिलित हैं और दूसरा है 'आत्मज्ञान' जो मुक्ति का साधन और जीवन का परम लक्ष्य है। बृहदारण्यक में आत्मज्ञान के तीन साधन कहे गए हैं – श्रवण, मनन, और निदिध्यासन।8 अतः वैदिक शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक उन्नति और अज्ञान से मुक्ति इन दोनों सोपानों के द्वारा जीवन की सम्पूर्णता को प्राप्त करना है। छान्दोग्य उपनिशद् में कहा गया है कि मन्त्रविद् होने के साथ आत्मविद् होना भी आवश्यक है।9

चरित्र–निर्माण–विद्यार्थी में ऋृत अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य और तप इत्यादि नैतिक मूल्यों का विकास करना वैदिक शिक्षण पद्धति का लक्ष्य था। 'ब्रह्मचर्य' संयम और साधना का मंत्र है। अथर्ववेद में कहा गया है 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत' ।10 शिक्षा से प्राप्त विद्या एक बौद्धिक प्रक्रिया है। ज्ञानप्राप्ति हेतु मन को शुद्ध, निर्विकार और एकाग्र रखना आवश्यक है, अतः चरित्र –निर्माण में ब्रह्मचर्य का विशेष महत्व है। विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहा जाता था। अथर्ववेद में ऋषि कहते हैं कि ब्रह्म अर्थात् नियम पर सारा विश्व चलता है अतः जैसे समग्र जगत् ही संयम से आबद्ध ब्रह्मचारी है।

ब्रह्मचारी व्रतचारी भी कहलाता था क्योंकि शिक्षा प्राप्ति हेतु उसे कुछ व्रतों अर्थात् नियमों का अनिवार्यतः पालन करना होता था। विद्यार्थी जीवन में सादा और अनुशासित जीवन चरित्र निर्माण का आधार था। तप अर्थात् परिश्रम विद्यार्थी के लिए ज्ञानप्राप्ति का मुख्य साधन है। तप के बिना ज्ञान कहाँ ? वेदों में कहा गया है कि –ऊर्जा धारण करता हुआ ब्रह्मचारी तप या श्रम से उन्नति करता है।12 देवता भी उसी की सहायता करते हैं जो परिश्रम करके श्रान्त होता है। (13 इस प्रकार शौच अर्थात् शरीर और मन की स्वच्छता, संतोष, तप, स्वाध्याय इत्यादि गुणों के द्वारा विद्यार्थी सच्चे अर्थों में शिक्षित होकर उत्तम समाज और राष्ट्र का निर्माण करने में सक्षम हो सकता था अतः यह इस प्रणाली का अन्यतम आदर्श था।

विश्वबंधुत्व–वैदिक दृष्टि में परमात्मा से ही समस्त जगत् प्रसूत है, वही सभी में विद्यमान है। 14 सभी प्राणी उसी परमात्मा का अंश हैं अतः व्यक्ति और समाज भिन्न नहीं हैं अपितु सभी मिलकर ही पूर्ण होते हैं। इसलिए मानव को सही अर्थ में मानव15 बनाना वैदिक शिक्षा प्रणाली का आदर्श है। 'पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वत' अर्थात् मनुष्य मनुष्य की हर प्रकार से रक्षा करे।16 मनुष्यमात्र के प्रति सौहार्द एवं सद्भाव जाग्रत करना इस पद्धति का लक्ष्य है।17 अथर्ववेद में सभी मनुष्यों के प्रति सद्भावना की कामना की गई है।18 वेद में सभी प्राणियों को प्रति मैत्री भाव से देखने की प्रार्थना की गई है।

वैदिक प्रणाली में ब्रह्मचारी अथवा विद्यार्थी का शिक्षालय गुरुकुल था।उपनयन संस्कार19 के पश्चात् विद्यार्थी अपने परिवार और कुल से बाहर आकर आचार्य20 के समीप निवास करते थे। गुरुकुल ग्रामों, नगरों से दूर प्रकृति के सुन्दर, शान्त वातावरण में स्थित होते थे। आश्रम में पितृतुल्य आचार्य जो पञ्चयज्ञादि का अनुष्ठान भी करता था, अपने आचरण, स्नेह, हृदय और आत्मा से विद्यार्थी को शिक्षित करता था।

वैदिक शिक्षा प्रणाली मानव जीवन के उदात्त लक्ष्यों की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है चाहे वह लौकिक हो या आध्यात्मिक। वैदिक शिक्षा प्रणाली व्यक्तित्व निर्माण और आत्मज्ञान, सत्यनिष्ठा और तप, संयम और शुचिता, आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणों के विकास का साधन थी। अतः वैदिक दृष्टि में शिक्षा का आदर्श मानव को सृष्टि की सुन्दरतम् रचना बनाना था, जो मनुष्य के साथ ही समस्त प्रकृति और परिवेष से भी मित्रवत् आचरण करे मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।21

lUnHkZ &lwph

1– आपस्तम्ब – परिभाषा सूत्र, 1/33
2– ऋृग्वेदभाष्यभूमिका दृसायण, पृष्ठ संख्या 44/चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
3– ऋृग्वेद 2/16/9
4– य इन्द्र शुष्मो मघवते अस्ति शिक्षा पुरुहूत नृभ्यः। ऋृग्वेद 7/27/2
5– धातुरूपमाला app/2830/
6– अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते। मुण्डकोपनिषद् 1/1/5
7– Vedic Foundations of Indian Culture, Bombay, Shri Dvaipayana Trust.(source - Internet
8– बृहदारण्यक 2-/4/5
9– छान्दोग्य उपनिशद् 7/1/3
10– अथर्ववेद 11/5/19
11– अथर्ववेद 11/5/20
12– अथर्ववेद 11/5/5
13– न ऋृते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। ऋृग्वेद 4/33/11
15– मनुर्भव, ऋृग्वेद 10/53/6
16– ऋृग्वेद 6/75/14,यजुर्वेद 29/51
17– तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः। अथर्ववेद 3/30/4
18– अथर्ववेद 17/1/7
19 – आचार्य उपनयनमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।11/5/3, अर्थात् जब बालक शिक्षा का व्रत लेकर आचार्य के समीप जाता था तब आचार्य उसे अपने अन्तःकरण में उसी तरह स्थान देता था जैसे माता संतान को अपने गर्भ में रखती है।
20– आचारं ग्राहयति, आचिनोति अर्थान, आचिनोति बुद्धिं इति वा। निरुक्त 1/2/3
21– यजुर्वेद 36/18

Mk oUnuk #gyk
lLd`r foHkkx
t0oh0 tSu dkyst lgkjuiqj